तितली

लेखन व चित्रांकन: पैट्रीशिया पोलाको

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

फ्रांस में बसे मोनीक के छोटे-से गाँव में जब से अपने लम्बे जूतों में नात्ज़ी सैनिक घुसे और वहाँ के बाशिन्दों को आतंकित करने लगे, मोनीक किसी बात से चौंकती नहीं है। आख़िर यह जंग का दौर जो है। तब एक रात मोनीक अपने बिस्तर के कोने पर एक नन्हे भूत को देखती है।

पर बाद में पता चलता है कि वह कोई भूत-वूत नहीं - बल्की एक छोटी यहूदी बच्ची सेवरीन है। वह नात्ज़ियों से बचने के लिए वह मोनीक के ही घर के तहख़ाने में छुपी है। मोनीक को अचम्भा क्योंकर न होता! रात के अंधेरे में मोनीक के कमरे में आपस में खेलते-खेलते दोनों बच्चियों में दोस्ती हो जाती है। पर तब वह डरावना पल भी आता है, जब उन्हें साथ देख लिया जाता है। दोनों ही बच्चियों के परिवार दहल जाते हैं। सेवरीन के परिवार को फिर से जान बचाने के लिए पलायन करना पड़ता है।

पैट्रीशिया पोलाको फ्रांसीसी भूमिगत विरोध के दौर में अपने ही परिवार के इतिहास को खंगाल यह दिल को झकझोरने वाली पर भावपूर्ण सच्ची दोस्ती की कहानी पेश करती हैं।

तितली

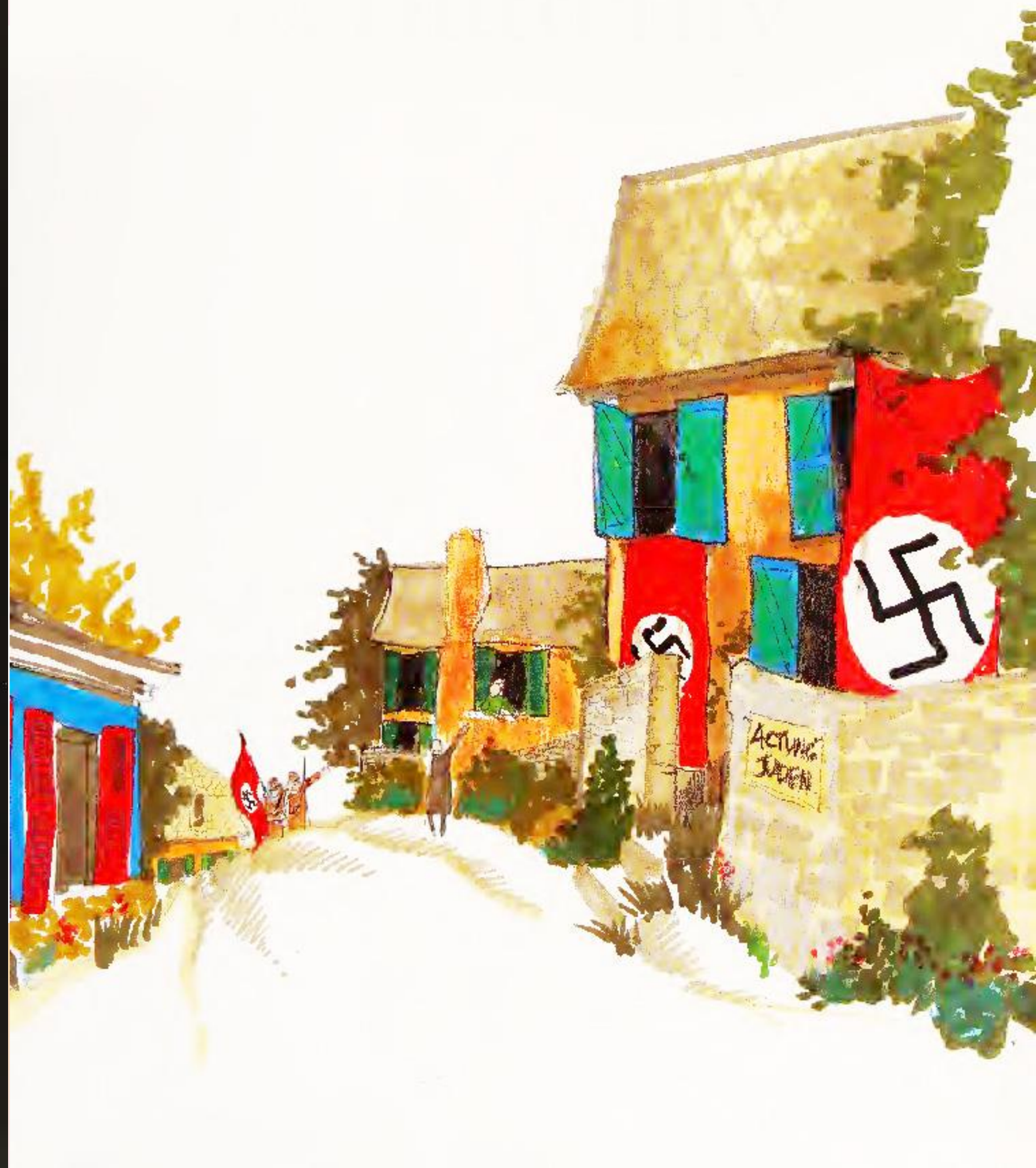

मेरी ग्रेट आंट (मौसेरी नानी) मार्सेल सोलिलियाज
और उनकी बेटी, मेरी मासी मोनीक बोसू गो के लिए दो
साहसी महिलाएं जिन्हें मैं आजीवन प्यार करती रहूँगी।

तितली

पेरिस के बाहर बसे गाँव चैसी-ल रुआ में, मोनीक के सोने के कमरे की खिड़की के बाहर चाँदनी पसरी थी। चाँद ऐसे चमक रहा था मानो कोई उत्सव हो। मोनीक चाँद को निहारती सोचने लगी कि शायद चाँद को पता ही नहीं है कि उसके गाँव पर नात्ज़ी सेना का कब्ज़ा है। उसके गाँव ही क्या, पूरे फ्रांस पर ही। और एक भयानक जंग छिड़ी हुई है, मोनीक को तो लगता था पूरी ही दुनिया में।

पर उस रात लग रहा था मानो चाँद को इसकी कोई परवाह ही न हो। मोनीक ने अपनी बिल्ली पिनुअफ को क़रीब खींचा। उसे छाती से चिपटा कर शुभरात्रि कहा और तब सो गई।

मोनीक को नहीं मालूम कि वह क्यों जागी। पर अचानक आँख खुलते ही उसने अपने बिस्तर पर खिड़की के पास एक भूतिया आकृति को देखा। वह उसकी ही उम्र की एक लड़की थी, जो पिनुअफ को दुलरा रही थी।

''तुम कौन हो?'' मोनीक फुसफुसाई।

वह भूत बच्ची उसकी ओर पलटी, उसकी उदास आँखें घबराई लग रही थीं। वह फ़ौरन उठी और मोनीक के कमरे से भाग गई।

अगली सुबह नाश्ते के समय मोनीक अपनी माँ को भूत के बारे में बताने को बेताब थी। पर माँ तो मानो खीज ही गई। वैसे मार्सेल सोलिलियाज कभी, किसीसे नाराज़ होती नहीं थीं। ''अरे, वह सपना था...सुना तुमने! सिर्फ़ एक सपना। अब चलो स्कूल जाओ। खुदा जाने कितने दिन और स्कूल जाने का मौका मिल सकेगा, इस जंग के कारण,'' माँ की आवाज़ आखिर धीमी हुई।

मोनीक स्कूल पहुँच अपनी पक्की सहेली डेनीस को सब बताने को बेसब्र हो उठी। क्योंकि मोनीक एकलौती बच्ची थी, डेनीस उसे बहन जैसी लगती थी।

उस दोपहर स्कूल से घर लौटते वक़्त डेनीस ने मोनीक से पूछा, ''वह भूत बच्ची कैसी लग रही थी?''

''उसका रंग साँवला था और आँखें बेहद उदास...,'' मोनीक ने जवाब दिया।

''क्या तुम्हें डर नहीं लगा?'' डेनीस ने जानना चाहा।

''हाँ, पहले-पहल लगा था। पर उसे देखते रहने पर मन में अजीब-सा ख़याल जगा। मुझे उससे नहीं, उसके लिए डर लगने लगा,'' मोनीक ने कहा।

दोनों सखियाँ मोस्यू मार्क की मीठी गोलियों की दुकान के सामने रुकीं और अन्दर झांकने लगीं। मोस्यू मार्क ने हमेशा की तरह हाथ हिलाया। वे मुहल्ले के बच्चों को प्यार करते थे। उनके एप्रन की जेब में रंग-बिरंगी पन्नियों में लिपटी मीठी गोलियाँ रखी होती थीं।

जब लड़कियाँ अन्दर घुसीं, उन्होंने देखा कि किस्म-किस्म की गोलियों और चॉकलेटों से भरे रहने वाले उनके अधिकतर मर्तबान खाली थे। जंग!

पर मोस्यू मार्क ने उनके लिए कुछ बचा रखा था। "तुम्हारे लिए नन्ही मोनीक," मोस्यू ने मोनीक के हाथ में चटक रंग में लिपटी एक गोली टपकाई। "और एक तुम्हारे लिए भी प्यारी नन्ही," और सुन्दर पन्नी में लिपटी एक गोली डेनीस के आतुर हाथों में आ गिरी।

मोनीक और डेनीस ने अपनी-अपनी गोलियाँ खोलीं और फ़ौरन मुँह में डालीं। पर जब वे दुकान से निकलीं तो उन्हें अचानक पहाड़ी से ऊपर आते लम्बे जूते दिखे।

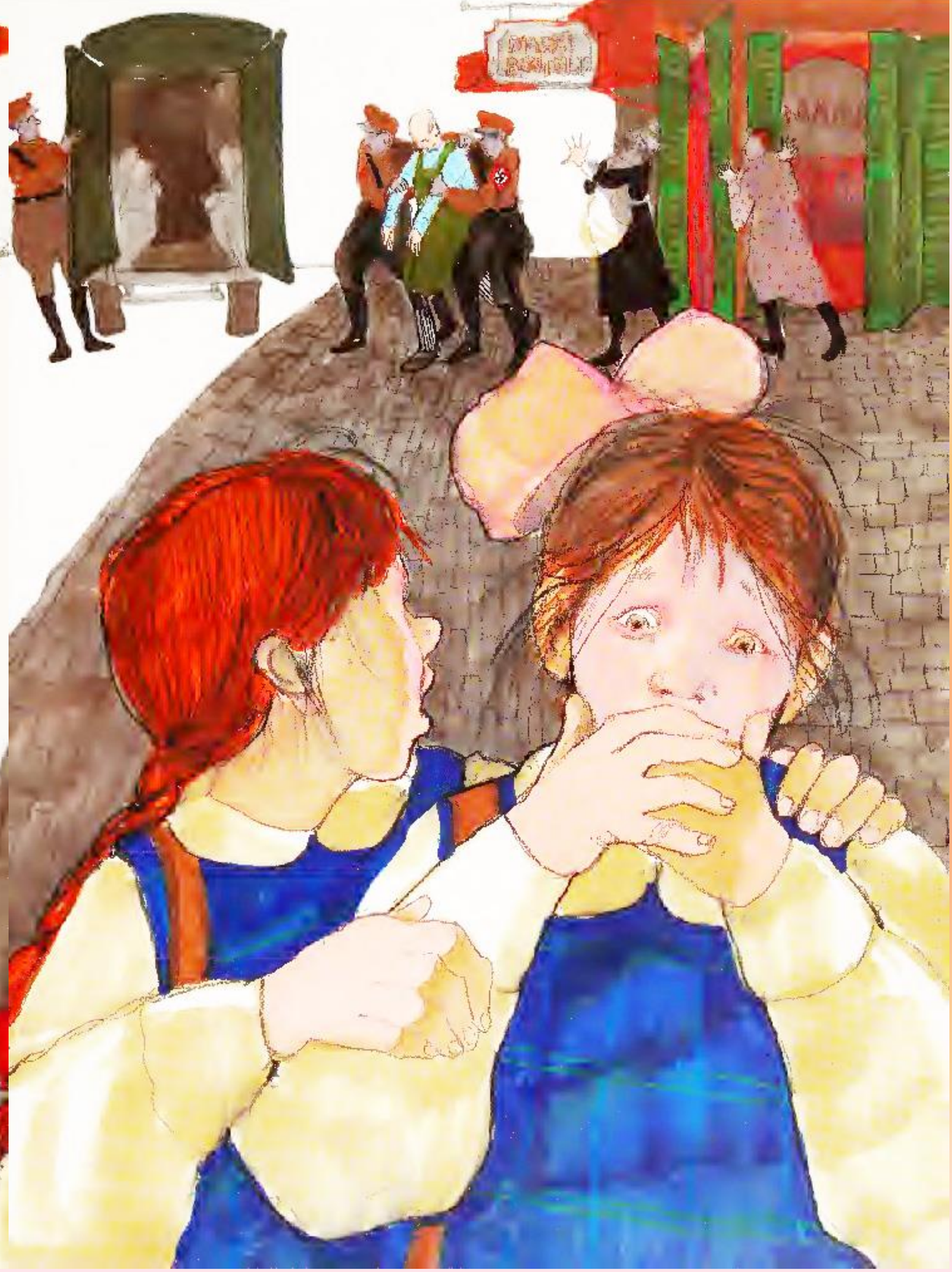

लम्बे चमचमाते जूते कदम से कदम मिला चलते नात्ज़ी सैनिकों के थे। जब उनकी एड़ियाँ सड़क पर बिछे कंकड़ों से टकरातीं, लगता बन्दूकें दागी जा रही हों। लोग उन्हें देख डर से जम-से जाते, उनसे आँखें चुराने की कोशिश करते। दोनों लड़कियाँ भी भाग जाना चाहती थीं, पर वे समझदार थीं। उन्होंने बेफिक्री जताते हुए बोलना और हंसना सीख लिया था।

"क्या वे हमारी ओर देख रहे हैं?" मोनीक ने कुछ दूर जा हाँफते हुए पूछा।

डेनीस ने पलट कर देखा। "नहीं वे आगे बढ़े जा रहे हैं।"

तब उन्हें चीखने और काँच टूटने की आवाज़ सुनाई दी। दोनों ने मुड़ कर देखा। वे यह देख सहम गईं कि नात्ज़ी सैनिक मोस्यू मार्क को उनकी दुकान से बाहर घरीट लाए हैं।

"श्वाइन (सूअर)...यूडन श्वाइन (यहूदी सूअर)!" सैनिक मोस्यू मार्क को ज़मीन पर धकेलते हुए गालियाँ बक रहे थे। उन्होंने अपने भारी काले जूतों से मोस्यू मार्क की पसलियों पर लातें जमाईं। मोनीक को अपनी चीख दबाने के लिए हाथ से मुँह ढ़कना पड़ा। तब एक गाड़ी आई और नात्ज़ियों ने मोस्यू मार्क को उसमें पटका।

"ज़्यादा देर मत घूरो मोनीक!" डेनीस ने चेताया। "ऐसा करने पर वे अगली बार हमारे लिए आएंगे।"

जब दोनों लड़कियाँ रु द बोनार पर दौड़ती मोनीक के घर पहुँचीं, वे सुबक रही थीं। वे जानती थीं कि नात्ज़ियों के कब्ज़े के दौरान ऐसी घटनाएं होती रहीं थीं। पर उन्होंने अपनी आँखों से यह देखा न था। और वह भी मोस्यू मार्क के साथ!

"क्यों...क्यों मामा, उन्होंने मोस्यू मार्क के साथ ऐसा क्यों किया?" मोनीक ने सुबकते हुए पूछा।

"नात्ज़ी मोस्यू मार्क जैसे लोगों से घृणा करते हैं, मेरी लाड़ली। बात बेतुकी और क्रूर है, पर..." उनकी आवाज़ फुसफुसाहट में बदल गई।

"मोस्यू मार्क जैसे लोग से क्या मतलब है मामा," मोनीक ने जानना चाहा।

"तुम्हें पता तो है मोनीक," माँ ने जवाब दिया। "यहूदी लोगों से।"

"पर मोस्यू मार्क तो फ्रांसीसी हैं?" डेनीस ने कहा।

मार्सेल ने दोनों को गले से लगाया। "नात्ज़ी यहाँ हमेशा के लिए नहीं रहेंगे, प्यारी बच्चियों। पर माता फ्रांस यहाँ सदियों से है। और नात्ज़ी एक छोटे पर डरावने समय के लिए।" मार्सेल की आँखें डबडबा आई थीं।

"मैं तुम दोनों को शान्त करने के लिए चाय बनाती हूँ। मोस्यू मार्क नहीं चाहेंगे कि तुम दोनों फिक्र करो या दुखी हो।"

"मदाम!" सामने के दरवाज़े से किसीने आवाज़ लगाई। ये पैर वोलिआर्ड थे, सेंट जर्मन द प्रे के पादरी। वे हड़बड़ाते अन्दर घुसे। "आपने सुना मोस्यू मार्क के साथ क्या हुआ?"

मार्सेल उन्हें बैठक में ले गईं और दरवाज़ा बन्द कर लिया। मोनीक माँ को कई बार लोगों से गुपचुप बातें करते देख चुकी थी। खासकर जंग छिड़ने के बाद से।

कई रातें बीतीं, पर मोनीक को वह नन्हा भूत नज़र न आया। पर तब एक रात मोनीक चौंक कर जग पड़ी। उसने खिड़की के पास उसी नन्हे भूत को बैठे देखा। इस बार वह पिनुअफ को थामे थी। यह सपना न था, क्योंकि मोनीक पिनुअफ को घुरघुराते सुन रही थी।

"मैं तुम्हें देख पा रही हूँ," मोनीक फुसफुसाई।

वह नन्ही उछल कर खड़ी हुई। पर इस बार मोनीक ने उसे भागने से रोक सकी।

"डरो मत, तुम यहाँ हो इससे कोई बिगाड़ नहीं होगा।"

उदास आँखों वाली वह नन्ही वापस बैठ तो गई, पर कुछ बोली नहीं।

"तुम्हारा नाम क्या है? तुम आई कहाँ से हो?" मोनीक ने आतुर हो पूछा।

लड़की देर तक पिनुअफ को ज़ोर से चिपटाए बैठी रही। "बहुत पहले मेरे पास भी ठीक ऐसी ही बिल्ली थी," आख़िरकार वह बोली।

"इसका नाम पिनुअफ है, और तुम्हारा नाम भला क्या है?" मोनीक उसके पास आ बैठी थी।

"मेरा नाम सेवरीन...सेवरीन है," वह फुसफुसा कर बोली।

"तुम रहती कहाँ हो?" मोनीक ने भी आहिस्ता से पूछा।

"जंग छिड़ी उसके बाद से मैं कई जगहों में रही हूँ," सेवरीन ने जवाब में कहा।

"पर अब कहाँ रहती हो? और तुम्हारे माँ-पापा? उन्हें तुम्हारी याद सताती होगी। खासकर इस तरह बीच रात में।"

लड़की ने कोई जवाब न दिया।

"कहाँ रहती हो तुम?" मोनीक ने ज़ोर देकर पूछा।

"यहीं पर!" सेवरीन आख़िर बोल ही पड़ी।

"यहाँ?" मोनीक अचरज से भर इतनी ज़ोर से पूछ बैठी कि पूरा मुहल्ला ही जाग उठे। "पर यहाँ तो मैं रहती हूँ!"

सेवरीन ने इशारा कर मोनीक को अपने पीछे आने को कहा। दोनों दबे पाँव दिन वाली बैठक में गए। वहाँ मोनीक को फ़र्श पर बने चोर-दरवाज़े पर से हटी हुई एक दरी दिखाई दी।

सेवरीन ने दरवाज़ा उठाया और दोनों संकरी सीढ़ियों से तहख़ाने के उस हिस्से में उतरे जिसे मोनीक जानती ही नहीं थी। उसकी दीवारें खुरच कर साफ़ कर दी गई थीं। वहाँ एक छोटी मेज़ थी जिस पर खाने की तश्तरियों से भरी एक ट्रे रखी थी। मोनीक को एक और छोटा कमरा दिखा जिसमें खाटें थीं। लगा उन पर लोग सो रहे हैं।

"मेरे माँ-पापा और मैं एक अर्से से यहाँ रह रहे हैं," सेवरीन ने फुसफुसा कर बताया। "नात्ज़ी हमें तलाशते हैं, तुम जानती हो ना? हम यहूदी हैं। हम लोग समूचे फ्रांस में छिपे हुए हैं।"

"पर तुम लोग यहाँ मेरी मामा के जाने बिना कैसे रह सके?"

"आह! मदाम सोलिलियाज? उन्हें पता है। और हम अकेले नहीं है हैं जिनकी उन्होंने मदद की है।"

यह सब उसके घर में हो कैसे रहा था? मामा ने इस बारे में कभी एक लफ़्ज़ तक नहीं कहा था।

"तुम्हारी माँ ने मुझसे वादा करवाया था कि मैं कभी तुम्हारे कमरे में उस वक़्त नहीं जाउंगी जब तुम उसमें हो!"

"मुझे कुछ समझ नहीं आया," मोनीक उलझन में थी।

"मेरे बारे में जानने से तुम ख़तरे में फंस सकती हो। वे तुम्हारा बचाव कर रही हैं।"

मोनीक कुछ और कहने वाली थी कि ऊपर वाले तल्ले पर पदचाप सुनाई दिए। क्या मार्सेल ने उन्हें सुन लिया था?

"जल्दी करो मोनीक!" सेवरीन उसे सीढ़ियों से ऊपर धकेलते हुए बोली।

"पर तुमसे अब कब मिलूंगी?" मोनीक ने दरवाज़ा बन्द होते समय अपनी नई सहेली से पूछा।

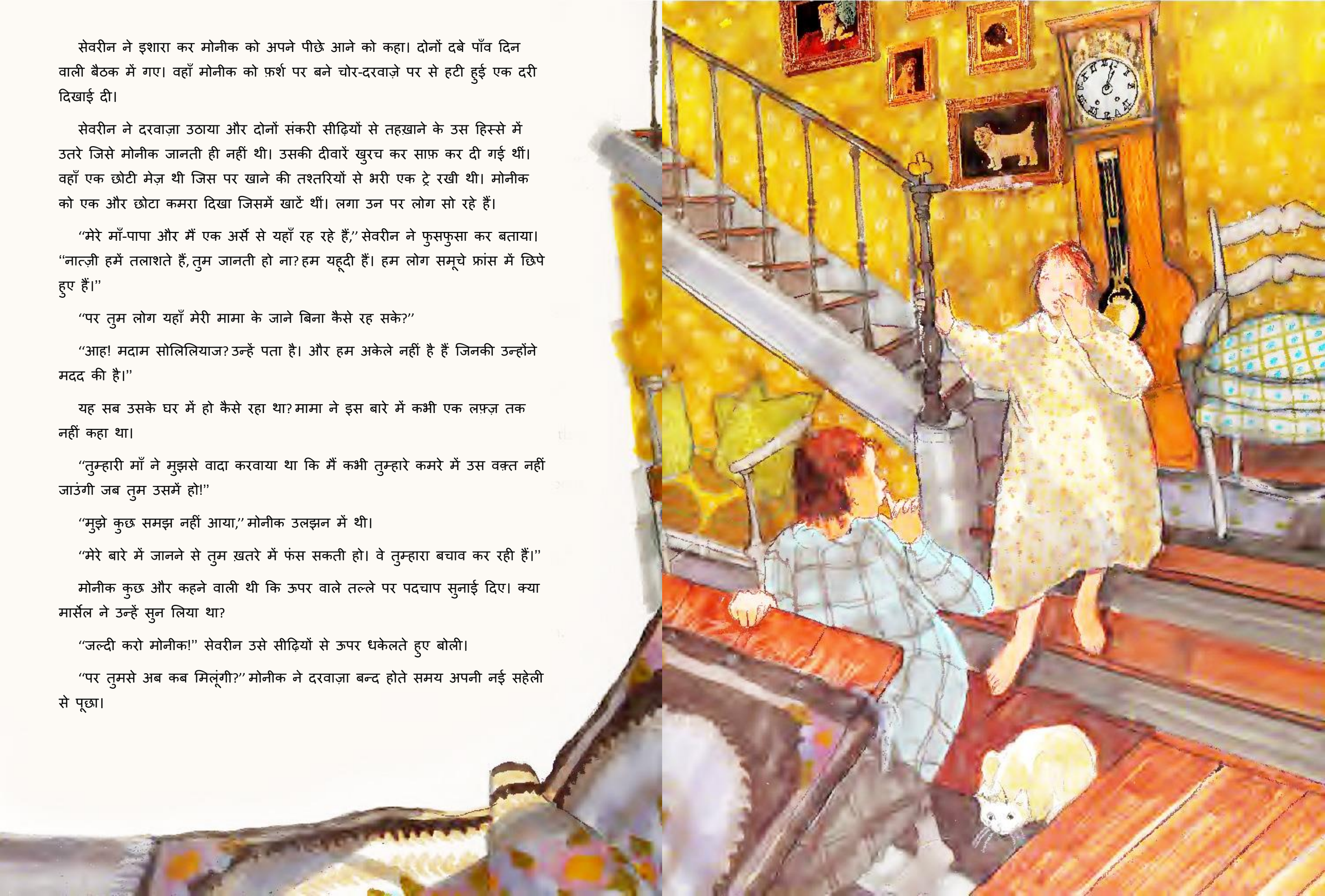

अगली सुबह नाश्ते पर मोनीक को सूझ ही नहीं रहा था कि वह माँ से कहे तो क्या। वे उसे रहस्यमयी लग रही थीं। पर वे हमेशा की तरह मोनीक से बतियाती रहीं। "बाग में जाओ मेरी प्यारी बिटिया, और मेज़ पर सजाने के लिए कुछ सुन्दर फूल तोड़ लाओ।"

मोनीक उछलती-कूदती रसोई के दरवाज़े से बाग में गई, पिनुअफ उसके पीछे थी।

पिनुअफ फूलों की पत्तियों से खेल रही थी। मोनीक ने कुछ फूल काटे और टोकरी में रखे। अचानक पिनुअफ घास पर सपाट लेट गई। उसकी आँखें चौड़ा गईं! मोनीक को जल्द ही पता चल गया क्यों। एक तितली एक से दूसरे फूल पर मंडरा रही थी। जब वह दीवार के पास एक नीले अपराजिता के फूल पर जा बैठी, मोनीक ने पिनुअफ को गोद में उठा लिया।

"नहीं, उसे डराना नहीं प्यारी, सिर्फ देखो! कितनी सुन्दर है वह, है ना?" दोनों चुप बैठे तितली को निहारते रहे।

पर अचानक हवा ठहर-सी गई और भारी लगने लगी। अब तक जो पाखी चहक रहे थे वे भी ख़ामोश हो गए। पिनुअफ ने खुद को मोनीक के एप्रन की तह में छिपा लिया। मोनीक ने दीवार के परे चमचमाते लम्बे जूते देखे। उसका दिल सहम कर उछला। तीन नात्ज़ी सैनिक उसे घूर रहे थे। उनमें से एक दीवार पर झुका और चमड़े के दस्ताने से ढ़की मुट्ठी में उसने तितली को पकड़ लिया। "खूबसूरत है ना?" वह मोनीक को देख मुस्कुराया और मुट्ठी भींच ली। बाकी लम्बे जूते वाले हंस पड़े। वे कुछ बुदबुदाए और आगे बढ़ गए।

"मामा, मामा! लम्बे जूते," मोनीक चीखते हुए घर की ओर भागी। उसने माँ को वह सब बताया जो घटा था।

"या खुदा! वे राक्षस हैं," माँ गुस्से से भर बड़बड़ाई। तब अपनी बेटी को ज़ोर से गले लगाया।

"मामा," मोनीक सुबकी। "क्या उन्होंने मोस्यू मार्क के साथ भी वही किया होगा जो तितली के साथ आज किया?" माँ ने कोई जवाब नहीं दिया। वे बस मोनीक को गले से लिपटाए हौले-हौले झुलाती रहीं। उनकी आँखें बाहर शून्य में ताक रही थीं।

पर मोनीक को जवाब मिल चुका था। अब उसे सेवरीन की आँखों में समाई पीड़ा समझ आई। अपने पड़ौसियों और दोस्तों की आँखों में उभर आने वाला भय भी समझ आया जो नात्ज़ियों के करीब आते ही बरबस उछल आता था। उसे समझ आ गया कि उसे अपनी नई सहेली को महफूज़ रखना है। किसी भी कीमत पर यह राज़ खुलना नहीं चाहिए कि सेवरीन उसके तहख़ाने में रहती है।

इसके बाद से सेवरीन तब-तब मोनीक के कमरे में आती जब वह अपने माँ-पापा या मोनीक की माँ को जगाए बिना गुपचुप आ पाती। मार्सेल को इसका पता नहीं चलना चाहिए यह वह समझती थी। जब दोनों बच्चियाँ साथ होतीं, वे तरह-तरह के कपड़े पहन स्वाँग खेलतीं। बीच रात में चाय पार्टी करतीं। वे हंसतीं, ठिठियातीं और एक-दूसरे को अपने सपने सुनातीं।

मोनीक बाहरी दुनिया की तमाम चीजें इकट्ठा करती, ताकि सेवरीन उन्हें, देख, छू, और अनुभव कर सके।

''आज तुम मेरे लिए क्या लाई हो?'' सेवरीन ने एक रात आहिस्ते से पूछा।

मोनीक ने एक कपड़े की छोटी-सी थैली में हाथ घुसाया और सेवरीन की हथेली पर थोड़ी-सी उपजाऊ काली मिट्टी बुरक दी। ''इस माटी में बाहर की हवा की खुशबू है,'' मोनीक ने कहा। तब उसने सेवरीन को अपने ही बाग का एक चटक फूल पकड़ाया। ''यह तुम्हारे लिए सूरज की रोशनी का काम करेगा और अब अपनी आँखें बन्द करो!'' मोनीक ने अपनी अंजुरी धीमे से खोली। ''देखो तो ज़रा!'' अंजुरी में एक बेहद खूबसूरत तितली थी।

''अरे! तितली!'' सेवरीन अचरज से फुसफुसाई।

मोनीक ने तितली सेवरीन के गाल पर रख दी। ''उसे अपने पंख फड़फड़ाने दो,'' मोनीक ने कहा।

सेवरीन ने अपनी साँस रोकी और मुस्कुराई।

''फरिश्ते के चुम्मे जैसा लगता है, है ना?'' मोनीक ने कहा।

सेवरीन के आँसू उसके गालों पर लुढकने लगे। "मुझे मेरे घर की याद सताती है मोनीक। मेरे खुद के बिस्तर की, मेरी बिल्ली की, मेरी बगीचे की।"

"नात्ज़ी हमेशा यहाँ नहीं होंगे सेवरीन। माँ कहती है कि वे ज़रूर जंग हारेंगे," मोनीक ने ढाढ़स बंधाते कहा।

"हम हमारे घर में शबाथ मनाते थे। दूसरे त्यौहार भी, पासओवर, हानुका...मेरी माँ दिनों-दिन तक पकवान बनाती थीं। पूरा परिवार दूर-दूर से इकट्ठा होता था। पर तब सब कुछ बदल गया। हमें भागना पड़ा। माँ-पापा को डर था कि नात्ज़ी हमें मार डालेंगे।"

"किसी दिन तुम ज़रूर घर लौटोगी, देखना।"

"पापा नम हवा में साँस लेते-लेते बीमार हो चुके हैं। उन्होंने महीनों से धूप नहीं देखी है। रात को माँ को उनका मुँह तकिए से ढ़कना पड़ता है ताकि उनके खाँसने की आवाज़ ऊपर सुनाई न दे।"

"मैं वादा करती हूँ सेवरीन, किसी दिन तुम आज़ाद होगी...इस तितली की तरह।"

"इसे अब उड़ जाने दो मोनीक," सेवरीन ने कहा। "जब वह उड़ेगी तो मुझे ऐसा लगेगा मानो पापा, माँ और मैं भी आज़ाद हो उड़ चले हैं!"

लड़कियाँ तितली को सोने के कमरे की खुली खिड़की के पास ले गईं और उसे रात की हवा में उछाल दिया। तब दोनों वहीं खड़ी हो उसे तब तक देखती रहीं, जब तक वह ओझल न हो गई।

अचानक उन्होंने ऊपर को देखा - न जाने क्यों। उन्हें सामने वाले घर के पड़ौसी मोस्यू लैनडोरमी दिखे। वे अपनी खिड़की से सीधे उनकी ही ओर ताक रहे थे।

मोनीक का दिल धक्क-से रह गया। सेवरीन फ़ौरन खिड़की से नीचे की ओर सरक गई, ताकि वह नज़र न आए। दोनों ने ख़ौफ़ से भर एक-दूसरे को देखा। उन्हें पता था कि अब मार्सेल को सब बताना ही पड़ेगा।

वे मार्सेल के कमरे की ओर दौड़ीं। उसे जगाया। वह दोनों को साथ देख चौंक गई। जब उन्होंने अपनी मुलाक़ातों और मोस्यू लैनडोरमी के बारे में बताया, मार्सेल उनके सामने घुटनों के बल सरक गई। "ऐ खुदा, हे रब!" वे दुख व डर से बोल पड़ीं।

"आप नाराज़ हैं, मदाम सोलिलियाज?" सेवरीन ने पूछा और रो पड़ी।

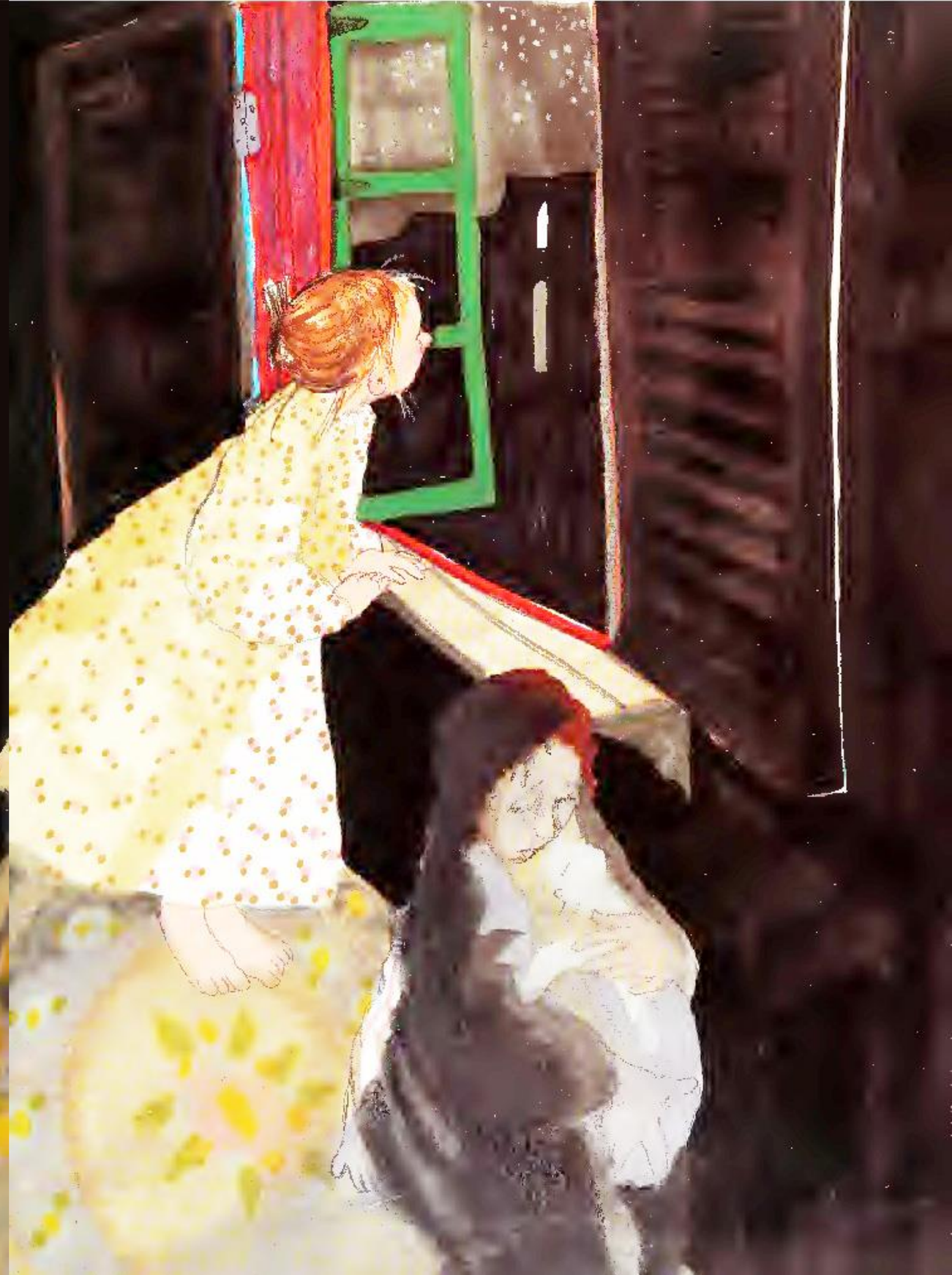

"अरे नहीं मेरी नन्ही। बिलकुल नहीं। मैं नाराज़ नहीं हूँ। तुम तो छोटी-सी बच्ची हो। तुमने यह जंग थोड़ी ना बुलाई है, न ही यहाँ इस तहख़ाने में रहना चुना है। तुम्हें खेलने की ज़रूरत थी - बच्चों को खेलने के लिए दूसरे बच्चे चाहिए होते हैं, बिटिया।" मार्सेल ने उसके बाल सुलझाए। "पर अब तुम यहाँ महफ़ूज़ नहीं हो मेरी प्यारी।"

"हमें आज रात ही घर छोड़ना होगा," मार्सेल अपने कपड़े बदलते बोलीं।

"हमें तुम्हें और तुम्हारे परिवार को देश से ही बाहर निकालना पड़ेगा। देखें क्या व्यवस्था की जा सकती है। पैर वोलियार्ड तुम्हारे माता-पिता को अगले आश्रय तक ले जा सकते हैं। तुम मेरे और मोनीक के साथ सफ़र करोगी। सुनो बच्चियों तुम लोग जितने कपड़े पहन सकती हो, पहन लो। कपड़ों पर परतें चढ़ाओ। हम सन्दूक-पोटलियाँ नहीं ले जा सकते। नहीं तो लोगों का ध्यान आकर्षित होगा।"

लड़कियों ने मार्सेल, पैर वोलिआर्ड और सेवरीन के माता-पिता को तहखाने के फ़र्श में गड्ढा खोदते देखा। उसमें वह सब दफ़न कर दिया गया जिससे लगता कि वहाँ कोई रह रहा था। निकलने का वक़्त आ चुका था। सेवरीन के माँ और पापा ईसाई नन और पादरी के भेस में निकले। सेवरीन को गले लगा विदा लेते समय दोनों रो रहे थे। तय यह हुआ कि वे सेवरीन से दक्षिणी फ्रांस के अगले गाँव में मिलेंगे, जो स्वित्ज़रलैण्ड की सरहद पर बसा था।

"आज रात खुदा हमारे साथ हो!" पैर वोलिआर्ड ने दुआ की।

"परवरदीगार हमारा मालिक है," सेवरीन के पिता ने रोते हुए प्रार्थना की। "खुदा हमारे साथ है।"

मोनीक, सेवरीन और मार्सेल को लगा मानो वे अंधेरे में मीलों चले हैं। वे पिछवाड़े की तंग गलियों-कूंचों से निकले, सड़क पर चमचमाती बत्तियों से बचते-बचाते। बड़ी सावधानी से ताकि आहट न हो।

पौ फटने तक वे ग्रामीण इलाके में थे। वे पेड़ों के एक झुरमुट के नीचे सुस्ताने रुके। वे उस जगह के क़रीब थे जहाँ से दूसरे लोग सेवरीन को उसके माता-पिता के पास ले जाने वाले थे।

मार्सेल ने दोनों को खाने के लिए डबलरोटी और पनीर दिया ही था कि अचानक दोनों को पास के गड्ढे में घसीट लिया। इशारे से दोनों को चुप रहने को कहा। नात्ज़ी सैनिकों से भरी गश्ती गाड़ी पास ही सड़क से धीमी रफ्तार से गुज़र रही थी।

गाड़ी के गुज़र जाने के बाद भी तीनों कुछ देर बिलकुल चुप बैठे रहे।

अंत-तंत एक दूसरी गाड़ी आई, वह भी सड़क पर ख़रामा-ख़रामा बढ़ रही थी। पुल से क़रीब सौ फीट की दूरी पर वह रुकी। उसकी बत्ती तीन बार जली और बुझी।

"समय आ गया है मेरी लाड़ली बच्ची," मार्सेल ने सेवरीन को गड्ढे से बाहर धकियाते हुए कहा। "ये लोग तुम्हारी और तुम्हारे माँ-पापा की मदद करेंगे।"

मोनीक ने गाड़ी के पास अपने झोले से कुछ निकाला, जिसे वह रास्ते भर ढोती रही थी। यह तो उसकी बिलौटी पिनुअफ थी! "इसे साथ लेती जाओ सेवरीन," मोनीक ने फुसफुसा कर कहा।

सेवरीन की आँखें भर आईं। उसने पिनुअफ को अपने स्वेटर के अन्दर कर लिया। तब अपनी जेब में हाथ डाल एक सुन्दर-सी पतली सोने की चेन निकाली जिस पर स्टार ऑफ डेविड (यहूदी आस्था का प्रतीक) लटका था। "मुझे याद रखना मोनीक।"

"हम लगभग घर पहुँच ही गए हैं, मेरी नन्ही," मार्सेल ने मेलन के रेल-स्टेशन पहुँच कहा। उन्हें यहीं से अपने गाँव चैसी-ल रुआ के लिए ट्रेन पकड़नी थी।

वक़्त सुबह-सुबह का था, इसके बावजूद मुसाफ़िरों की असाधारण भीड़ थी। स्टेशन ठंसा हुआ था। नात्ज़ी सैनिक हर ओर लोगों को रोक कर उनकी तलाशी ले रहे थे, उन पर हुकुम झाड़ रहे थे। मार्सेल ने बेटी का हाथ कस कर थामा। मोनीक के दूसरे हाथ में सेवरीन की चेन भिंची हुई थी।

मोनीक और मार्सेल उस फ़ाटक के क़रीब आए जहाँ कागज़ातों की जाँच होनी थी। मार्सेल ने अपने बटुए से टिकट और कागज़ात निकाले। ट्रेन पकड़ने के लिए सभी लोगों को इसी संकड़े फ़ाटक से अन्दर घुसना था।

मोनीक और मार्सेल के पीछे भीड़ अचानक धकिया कर आगे बढ़ी। धक्का इतना ज़बरदस्त था कि मोनीक का हाथ छूट गया। अब उसे अपनी माँ दिख ही नहीं रही थी। लोग धक्का-मुक्की, खींचा-तानी कर रहे थे। मोनीक का पैर सरका और वह नीचे गिर पड़ी। उसकी पकड़ से सेवरीन की दी चेन प्लैटफ़ॉर्म पर गिर गई।

उसने फुर्ती से चेन उठाई और अपनी जेब में रखी। तब वह खड़ी हुई और उस क़तार में लग गई जहाँ से धकियाते लोग रेल डिब्बे में घुस रहे थे।

लम्बे जूते सबको डपट रहे थे। अगर वे उसकी तलाशी लें और सेवरीन की चेन बरामद कर लें, तो? और मामा, वह भला कहाँ है?

मोनीक को अपने डिब्बे की खिड़की से तमाम लोग दिख रहे थे जो उलटी दिशा की ट्रेन पकड़ने का इन्तज़ार कर रहे थे। क्या उसकी मामा धक्के से उस कतार में जा लगी है? अपने आँसुओं के बीच उसने माँ का चेहरा तलाशने की कोशिश की। तब उसे एक अकेली लड़की नज़र आई। दुबली-पतली और सहमी-सी वह लड़की सेवरीन की तरह उदास लगी।

लड़की की कोट पर पीले रंग का स्टार ऑफ डेविड टंका हुआ था। क्या वह सेवरीन थी? ना, अब उसे साफ़ नज़र आया कि यह सेवरीन नहीं है।

मोनीक की मुट्ठी जेब में रखी चेन के गिर्द बंध गई।

"ओह मामा, मामा तुम कहाँ हो?" झटके से ट्रेन चल पड़ी और मोनीक की रुलाई छूट पड़ी।

ट्रेन शोर के साथ रुकी। स्टेशन की तख़्ती पर सेंट जॉर्ज लिखा था। चैसी-ल रुआ के घर से सिर्फ दो किलोमीटर दूर। मोनीक ने वे ही पिछवाड़े वाले गली-कूंचे पकड़े जिनसे वह पिछली रात सेवरीन और माँ के साथ गुज़री थी। "ओह मामा," चलते हुए उसका रोना जारी थी।

आख़िरकार उसे घर का जाना-पहचाना फ़ाटक दिखा। उसे धकेल, सीढ़ियाँ चढ़ वह अन्दर घुसी। हवा में उसकी माँ के इत्र की खुशबू अब भी महक रही थी। वह बेहद थक चुकी थी। वह अपने बिस्तर पर पसरी और गहरी नींद सो गई।

उसने सपने में माँ की आवाज़ सुनी। "अरे मेरी प्यारी नन्ही," आवाज़ ने पुकारा। तब सपने में ही एक ठण्डी हथेली ने उसके कपाल पर हाथ फिराया। सपना इतना वास्तविक कि उसे लगा कि सचमें यह सब हो रहा है।

तब उसने आँखें खोलीं और पाया कि वह हाथ असली था! आवाज़ भी! सामने मामा ही तो थी!

"अरे मेरी लाड़ली बहादुर बच्ची," माँ उसे गोद में समेट झुलाते हुए बोली। "मुझे पक्का विश्वास था कि तुम मुझे यहीं मिलोगी।"

एक सप्ताह बीता, तब दूसरा भी। मोनीक कल्पना करती रही कि सेवरीन, उसके माँ-पापा, और पिनुअफ सब भले-चंगे होंगे। तब उसके दरवाज़े के सामने से लम्बे जूते गुज़रते। उसे याद दिलाते कि नाउम्मीदी के हालात कायम हैं। काश सेवरीन की तरफ़ से उसे कोई संदेश मिलता। कोई संकेत। कुछ भी!

एक दिन मार्सेल और मोनीक बाग में अगली साल के लिए फूलों के बल्ब (कन्द) बो रहे थे। जब मार्सेल ने अचानक ज़ोर से साँस खींची।

"देखो मोनीक, देखो तो!" माँ आसमान की ओर इशारा कर रही थी। एक तितली फड़फड़ाती हुई नीचे उतरी। तब दूसरी। इसके बाद एक और।

दोनों एकटक देखती रहीं और तितलियाँ सूखी टहनियों, कुम्हलाए फूलों पर आकर बैठती गईं। पहले सिर्फ़ तीन थीं, तब दस, बीस और तीस!

पड़ौसी अपने घरों से निकले और उनकी मेड़ की दीवार से अचरज से भर झांकने लगे।

"यह एक संकेत है, मामा! एक चमत्कार! इन्हें सेवरीन ने भेजा है। मैं जानती हूँ! वह और उसके माँ-पापा महफ़ूज़ हैं।"

मोनीक ने अपना हाथ ऊँचा उठाया और एक तितली उसकी उंगली पर आ बैठी। वह उसे अपने गाल के पास ले गई। उसके पंख फड़फड़ाए। "एक चुम्मा!" मोनीक ने हौले से कहा।

लेखिका की टीप

मार्सेल सोलिलियाज उस फ्रांसीसी भूमिगत आन्दोलन का हिस्सा थीं जिसे जनरल चाल्स द गॉल और अनेक निस्वार्थी फ्रांसीसियों ने नात्ज़ियों के विरोध में संचालित किया था। इन लोगों ने अपने घर उन यहूदियों के लिए खोले जो नात्ज़ियों से जान बचाने की कोशिश कर रहे थे। हालांकि यह खुद उनके और उनके परिवारों को जोखिम में डाल सकता था।

मेरी मासी मोनीक के अनुसार उनकी माँ मार्सेल तब से भूमिगत विरोध का हिस्सा थीं, जब से नात्ज़ियों ने फ्रांस पर कब्ज़ा किया था। पर मोनीक को इसकी तब तक कोई भनक न थी, जब तक सेवरीन से उसकी मुलाक़ात न हुई। अन्दोलन से उनके घनिष्ठ जुड़ाव का पता तो मासी को युद्ध ख़त्म होने के बाद ही हुआ।

फ्रांस के मुक्त होने के दो वर्षों के अन्दर मोनीक और मार्सेल को एक ख़त मिला। लिफ़ाफ़े में एक कार्ड था जिस पर एक तितली का चित्र था। अन्दर लिखा था - "मैं ज़िन्दा हूँ! सेवरीन"। उसके दस्तख़त के पास एक पंजे का निशान भी था।

बाद में पता चला कि सेवरीन के माता-पिता पलायन की कोशिश में बच न सके। पर सेवरीन को स्वित्ज़रलैण्ड पहुँचा दिया गया और वह वहाँ से इंग्लैण्ड पहुँची। युद्ध के दौरान वह अपने परिवार के मित्रों के साथ इंग्लैण्ड में रहती रही। तब कुछ समय बाद वह अपने रिश्तेदारों के साथ नवगठित इज़रायल में जा बसी। मोनीक और सेवरीन आज तक दोस्त हैं।

युद्ध समाप्त होने के तीस वर्षों बाद मार्सेल ने स्थानीय यहूदी एजेन्सियों से सम्पर्क साधा। कहा कि वे उस सामान को ले लें, जो उनके घर के तहख़ाने में पनाह लेने वाले परिवारों का था और अब तक भी वहीं गड़ा है। उसे वापस लेने कोई आया ही नहीं था।